हंगरी की हाल की घटनाओं के प्रसंग में

शिवदास घोष

हंगरी की हाल की घटनाओं के प्रसंग में

यह लेख उस समय लिखा गया था, जब हंगरी की कानूनसम्मत सरकार के फौरी अनुरोध पर सोवियत लाल सेना को हस्तक्षेप कर वहां प्रतिक्रांतिकारी अभ्युत्थान को ध्वस्त कर समाजवादी राज्य की रक्षा करनी पड़ी थी।

पूर्वी यूरोप के जन गणतांत्रिक देशों, विशेषकर हंगरी की हाल की घटनाओं ने दुनियाभर के कम्युनिस्ट-समर्थक और कम्युनिस्ट-विरोधी दोनों ही तबकों में बड़ी खलबली पैदा कर दी है। हंगरी की इन घटनाओं को केन्द्र करके कम्युनिज्म और सोवियत संघ के दुश्मन एक बार फिर दुनिया के विभिन्न देशों में सोवियत-विरोधी निंदा अभियान में जुट गये हैं। इन प्रतिक्रियावादी गुटों को एक तरफ छोड़ दें, तो भी इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि पूर्वी यूरोप के देशों की मौजूदा घटनाओं के कारण वे लोग भी, जो लोग कल तक सोवियत संघ के समर्थक थे, कम्युनिज्म के लक्ष्य, आदर्श और सोवियत समाजवादी गणराज्य संघ (यूएसएसआर) की विदेश नीति के बारे में बहुत आशंकित और संशयी हो गये हैं। बुर्जुआ प्रेस और उनके भाड़े के टट्टू इन सभी संदेहों एवं आशंकाओं को दृढ़ आधार प्रदान करने का भरसक प्रयास कर रहे हैं। यहां तक कि विभिन्न देशों में कम्युनिस्टों के एक तबके में भी इन घटनाओं ने सोवियत संघ की भूमिका और सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी (सीपीएसयू) के नेतृत्व के चरित्र के बारे में तरह-तरह की भ्रांतियां पैदा कर दी हैं। इसमें कोई संदेह नहीं कि इन सबसे दुनिया के लोगों के सामने अस्थाई तौर पर ही सही, सोवियत संघ की छवि धूमिल करने में मदद पहुंची है। एक ऐसे समय जब सोवियत संघ विश्व शांति आन्दोलन का नेता है और जब उसकी विदेश नीति एशियाई एवं अफ्रीकी देशों में नवोदित राष्ट्रवाद के उत्थान का गला घोंटने और उनकी आजादी के संघर्ष को कुचलने के ब्रिटिश-अमेरिकी-फ्रांसीसी साम्राज्यवादियों के कुचक्र के खिलाफ तथा उससे भी बढ़कर विश्वयुद्ध

छेड़ने की उनकी साजिश के खिलाफ दुनिया के शांति-पसंद एवं शोषित लोगों की सुरक्षा की गारंटी है-सोवियत संघ की विदेश नीति तथा उसके नेतृत्व की भूमिका व चरित्र के बारे में तथाकथित कम्युनिस्टों के एक तबके समेत जनता के मन में उपजी ये दुविधाएं एवं आशंकाएं निस्संदेह शांति के प्रयोजन को ही काफी हद तक कमजोर करेंगी। खास तौर पर इसीलिए यह और भी महत्वपूर्ण है कि हंगरी की हाल की घटनाओं तथा सीपीएसयू नेतृत्व एवं सोवियत संघ द्वारा निभाई गयी भूमिका का सही एवं विशद विश्लेषण तथा मूल्यांकन किया जाये। अंध समर्थन या अंध विरोध दोनों तरह की झोंक से मुक्त होकर की गयी इन घटनाओं की गहन समीक्षा एक बिंदु को साफ तौर पर उजागर कर देगी। इमरे नागी को सत्ता पर पुन: बैठाने का जो आन्दोलन शुरू हुआ था और जिसने कम्युनिस्टों के बीच मतभेदों को लेकर अंतर्कलह पैदा कर दी थी, वह अंततोगत्वा सोवियत-विरोधी प्रतिक्रियावादी अंध राष्ट्रवाद से गंभीर रूप से प्रभावित था और उसके अवश्यम्भावी परिणाम के तौर पर सर्वहारा अंतर्राष्ट्रीयवाद के लिए पराये हर तरह के प्रतिक्रियातावादी नारे जैसे कि सोवियत सैनिकों की वापसी की मांग, वारसा संधि को रद्द करने की मांग, सोवियत संघ और संयुक्त राज्य अमेरिका-दोनों से मदद लेकर अर्थव्यवस्था को निर्मित करने की मांग, हंगरी को एक गुट-निरपेक्ष देश घोषित करने की मांग और ऐसी ही अन्य मांगों वाले नारे उठाये गये थे! चूंकि नागी सरकार ने प्रतिक्रियावादी राष्ट्रवादी ताकतों के समक्ष घुटने टेक दिये थे, इसलिए क्रांतिकारी जनता द्वारा समर्थित बहुसंख्यक कम्युनिस्टों ने, जो इन प्रतिक्रियावादी चालों का शिकार नहीं हुए थे, उनकी कमियां, सीमाबद्धताएं एवं गलतियां चाहे जो भी क्यों न रही हों, जानोस कादर के नेतृत्व में एक नयी सरकार का गठन किया, जिसमें अधिकांश मंत्री पुराने मंत्रिमंडल के ही थे। परिस्थिति की गंभीरता को महसूस कर इस नयी सरकार ने सोवियत संघ से इस प्रतिक्रांति का दमन करने, शांति स्थापित करने तथा बड़ी मुश्किल से कायम किये गये जन गणतांत्रिक राज्य को बचाने में मदद करने का अनुरोध किया। वारसा संधि के अनुसार सोवियत संघ की यह जिम्मेदारी बनती है कि वह कानूनी एवं वैध सरकार द्वारा देश में शांति बहाल करने के अनुरोध का पालन करे। अत: जो लोग बात का बतंगड़ बना रहे हैं और सोवियत कार्रवाई को एक पराये देश पर हमला करार दे रहे हैं तथा इस प्रकार अपने आपको सोवियत-विरोधी निंदा अभियान में संलग्न कर रहे हैं, वे या तो पूर्णत:

अनजान हैं या जानबूझकर आंग्ल-अमेरिकी साम्राज्यवाद के दलाल के रूप में काम कर रहे हैं। इसके अलावा विभिन्न देशों के तथाकथित मार्क्सवादियों या कम्युनिस्टों के बीच इन घटनाओं को केन्द्र कर जो संदेह और भ्रांतियां प्रचलित हैं, वे हमारी राय में मुख्यत: दो कारणों से हैं।

प्रथमत: 'जनता' शब्द के बारे में उनके विवेकहीन मोह तथा राष्ट्रवादी आन्दोलन पर प्रतिक्रियावादी बुर्जुआ विचारधारा के प्रभाव के कारण ऐसा हुआ है। द्वितीयत:, यह समझ पाने में उनकी विफलता के कारण ऐसा हुआ है कि दूसरे देशों की कम्युनिस्ट पार्टियों पर सीपीएसयू के वर्चस्वी रवैये (यदि यह सच हो तो भी) से लड़ने का सोवियत संघ के प्रति बैर-भाव रखने या सोवियत-विरोधी उन्मत्तता को समर्थन देने या उसे उकसाने की कार्रवाई से कुछ लेना-देना नहीं है। किसी दूसरी कम्युनिस्ट पार्टी के आधिपत्य और हस्तक्षेप के खिलाफ लड़ने के लिए उस पार्टी का चाहे जो भी कद क्यों न हो, बिरादराना कम्युनिस्ट पार्टियों के बीच एक यांत्रिक संबंध की जगह द्वन्द्वात्मक संबंध कायम करना अनिवार्य है, परंतु सोवियत संघ के प्रति दुश्मनीपूर्ण रवैया रखना या सोवियत-विरोधी झोंक से ग्रस्त होना एक कम्युनिस्ट के लिए अक्षम्य अपराध है, क्योंकि यह सर्वहारा अंतर्राष्ट्रीयतावाद के खिलाफ और इस वजह से मार्क्सवाद-लेनिनवाद के मूल सिद्धांतों के खिलाफ चला जाता है।

लेकिन इन सब के बावजूद एक सवाल रह जाता है—कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में जनता के जनतांत्रिक राष्ट्र की स्थापना के 7-8 साल बाद भी प्रतिक्रियावादी राष्ट्रवादी विचारधाराएं जनमानस में इतनी गहरी पैठ कैसे कर सकीं? इसलिए इस समस्या से जुड़े बुनियादी सवालों का समाधान करने की परवाह किये बिना येन-केन-प्रकारेण इससे शीघ्र छुटकारा पाने के किसी भी प्रयास से भविष्य में भी वही समस्या उत्पन्न होने की संभावना बनी रहेगी और इसी तरह से पूर्वी यूरोप के समाजवादी देशों तथा सोवियत संघ के बीच संबंधों को खराब भी कर सकती है।

यहां हम सीपीएसयू की 20वीं कांग्रेस की रिपोर्ट पर हमारी पार्टी के मंतव्य के केवल उस पहलू को ही दोहराना चाहेंगे, जिसकी ओर हमने अन्य देशों के सभी कम्युनिस्टों का ध्यान खींचा था। उसमें हमने दिखाया था कि स्तालिन की गलतियों एवं त्रुटियों को दर्शाने एवं उनके विरुद्ध संघर्ष चलाने तथा लेनिनवाद का अनुमोदन करने के नाम पर इन्होंने ''समाजवाद हासिल करने के अलग-अलग तौर तरीकों'' की लेनिनवादी अवधारणा की

व्याख्या अंतत: सुधारवादी राष्ट्रवादी नजरिये से ही कर डाली थी। सोच एवं नजरिये के इस सुधारवादी राष्ट्रवादी रुझान से एक कम्युनिस्ट पार्टी का प्रभावित हो जाना कोई असंभव बात नहीं है।

हमें इसमें जरा भी आश्चर्य नहीं होगा कि ये कम्युनिस्ट पार्टियां अंधानुकरण करने की मौजूदा कार्यपद्धति की उलट प्रतिक्रियास्वरूप सीपीएसयू की हर बात का, इस या उस बहाने, विरोध करने के ''अति स्वतंत्र'' एवं चरम रुझान को जन्म दे डालें। क्योंकि यह चरम विपरीत रुझान अंध गुरुवाद का ही अवश्यंभावी परिणाम है, जो पहले की ही तरह आज भी अंतर्राष्ट्रीय साम्यवादी आन्दोलन को प्रभावित कर रहा है।

जारशाही रूस एवं पश्चिमी साम्राज्यवादी ताकतों के दमनकारी व शोषणकारी शासन के लम्बे काल के दौरान बाल्कन राष्ट्रों की जनता की दबाई गयी और इस तरह घनीभूत हुई राष्ट्रवादी भावनाओं को द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद स्वाभाविक एवं सहज अभिव्यक्ति मिली, जब लाल फौज की मदद से फासीवादी जर्मनी को परास्त कर दिया गया और इन देशों में कम्युनिस्ट पार्टियों के नेतृत्व में जन गणतांत्रिक राष्ट्रों की स्थापना कर दी गयी। इन देशों की कम्युनिस्ट पार्टियों के अंदर भी काफी दूर तक राष्ट्रवादी भावनाओं का असर देखा गया था। पूर्वी यूरोपीय कम्युनिस्ट पार्टियों के कई नेता खुद को अंध राष्ट्रवाद से मुक्त नहीं कर पाये, हालांकि यह सर्वहारा अंतर्राष्ट्रीयतावाद का विपरीतधर्मी है। टीटो के नेतृत्व में ''अलग बाल्कन संघ'' की मांग कम्युनिस्ट आन्दोलन में अंध राष्ट्रवाद के मौजूद होने का स्पष्ट उदाहरण है। स्तालिन के जीवनकाल में पार्टी के अंदर और बाहर उनके सुयोग्य नेतृत्व में जारी तीव्र वैचारिक संघर्ष के चलते यह अंध राष्ट्रवादी भावना, जो सर्वहारा अंतर्राष्ट्रीयतावाद की विपरीतधर्मी है, अपना मनहूस सिर नहीं उठा सकी थी। परंतु व्यक्ति-पूजा का खात्मा करने के नाम पर जिस तरह कॉमरेड स्तालिन की आलोचना की गयी, उससे दुनिया की विभिन्न कम्युनिस्ट पार्टियों एवं जनता की नजर में और विशेषकर पूर्वी यूरोपीय देशों की जनता एवं कम्युनिस्ट पार्टियों की नजर में न केवल उनकी ही मान-मर्यादा कम हुई, बल्कि काफी हद तक सीपीएसयू की छवि भी मलिन हो गयी। इसके अलावा, कम्युनिस्ट लीग ऑफ युगोस्लाविया और पूर्वी यूरोपीय देशों के अन्य टीटोपंथी कम्युनिस्टों के प्रति रवैये में बदलाव के परिणामस्वरूप तथा "समाजवाद हासिल करने के अलग-अलग तौर तरीके" के लेनिनवादी सिद्धांत की ख्रुश्चेव नेतृत्व

द्वारा राष्ट्रवादी सुधारवादी व्याख्या के कारण भी दबी हुई उग्र-राष्ट्रवादी भावनाएं, जो तीव्र वैचारिक संघर्ष के चलते अब तक शांत थीं, सोवियत-विरोधी आन्दोलन के रूप में दोगुनी तीव्रता के साथ गुस्से में फट पड़ीं। सख्ती से प्रतिक्रियावादियों का दमन करने के कारण ख्रुश्चेव नेतृत्व द्वारा कॉमरेड स्तालिन को एक अफसरशाह बताकर बहुत निंदा की गयी, परन्तु स्वविरोधाभासी ढंग से वही ख्रुश्चेव नेतृत्व हंगरी में प्रतिक्रांतिकारियों को दबाने के लिए उससे सैकड़ों गुना अधिक बेरहमी का सहारा लेता है।

अंत में हम अपनी पहले कही गयी बात को फिर दोहराना चाहेंगे और सीपीएसयू के नेताओं तथा विभिन्न देशों के अन्य कम्युनिस्ट दोस्तों से इस बात को महसूस करने की अपील करना चाहेंगे कि व्यक्ति-पूजा के उन्मूलन की जिम्मेदारी मात्र मौखिक घोषणा के साथ खत्म नहीं हो जाती है। यह बात याद रखें कि व्यक्ति-पूजा आज भी अंतर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आन्दोलन की चिंतन-प्रक्रिया में विभिन्न रूपों में प्रभाव डाल रही है। अंध गुरुवाद विभिन्न रूपों में आज भी कम्युनिस्टों की चिंतन-प्रक्रिया को प्रभावित कर रहा है। असल में, यह प्रायः एक चिंतन पद्धति के रूप में विकसित हो चुका है। सोवियत नेतृत्व के अंध समर्थन या अंध विरोध का कोई भी शॉर्टकट तरीका कम्युनिस्ट पार्टियों को उस गतिरोध की स्थिति से नहीं बचा सकता, जो उनके आपसी संबधों में पैदा हो चुका है। सोवियतवाद-विरोधी मौजूदा रुझान में प्रकट हुए अंध राष्ट्रवाद या टीटोवाद का प्रभाव अंध गुरुवाद की विपरीत प्रतिक्रिया के सिवा और कुछ नहीं है। अगर हम कम्युनिस्ट लोग समय रहते तीव्र वैचारिक संघर्ष चलाकर कम्युनिस्टों की चिंतन-प्रक्रिया और आन्दोलन को गुरुवाद एवं सुधारवादी राष्ट्रवादी दृष्टिकोण से मुक्त करते हुए सामूहिक रूप से सर्वहारा अंतर्राष्ट्रीयतावाद के झंडे को बुलन्द नहीं कर सके, तो कोई संदेह नहीं कि हमारे बीच अभी भी मौजूद आपसी रिश्ते-नाते और मेल-मिलाप आगे और भी बिगड़ जायेंगे।

यह लेख सर्वप्रथम 15 नवम्बर 1956 को हमारी पार्टी एसयूसीआई (सी) के बांग्ला मुखपत्र *गणदाबी* के नवम्बर क्रांति विशेषांक में प्रकाशित हुआ था।